JAIN REFERENCE LIBRARY
ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA
12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

1545 1545_Search_Results_For_go

Result Format : (Keyword No.) Keyword > Book Code - Page No.

(1) आठ गोचरभूमियां : ऋज्वी आदि >> - P. (2) इन्द्रगोपक >> - P. (3) गौतमविजय - १ >> - P. (4) " एक्काइ " का असाध्य रोगों से पीड़ित होना >> - P. (5) " त्रस भूत प्राणी त्रस है, और त्रस प्राणी त्रस है. ये दोनों वाक्य समान अर्थ वाले है " ऐसा गौतम ने कहा >> - P. (6) " संग्राम में मरने वाला देवता होता है " इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न >> - P. (7) (डॉ०) प्रेमप्रकाश गौतम >> - P. (8) 31 के 32 सागरोपम, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (9) 4 प्रकृतियाँ अघाती क्यों ?, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (10) अंगउ >> - P. (11) अंगउवंग >> - P. (12) अंगओलगूं >> - P. (13) अंगमंगो >> - P. (14) अंगूंथल >> - P. (15) अंगूठी >> - P. (16) अंगूथली >> - P. (17) अंगोपांग >> - P. (18) अंगोपांग के 3 भेद >> - P. (19) अंगोपांग नाम कर्म >> - P. (20) अंगोल >> - P. (21) अंगोवंग >> - P. (22) अंगोवंगाइं >> - P. (23) अंगोहल >> - P. (24) अंगोहलिं >> - P. (25) अंगोहली >> - P. (26) अंगोहलेऊण >> - P. (27) अंडगोलिक मनुष्य >> - P. (28) अंडगोलिक मनुष्य, जिज्ञासा - सौम्यप्रभविजय >> - P. (29) अंडगोलिक मनुष्य, समाधान - शीलचन्द्रविजय >> - P. (30) अंडगोलिक मनुष्यनुं मृत्यु क्यारे ?, जिज्ञासा - परमयशविजय >> - P. (31) अंतगो >> - P. (32) अंतर-बाह्य व्रण के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (33) अंतरंतगो >> - P. (34) अंतरदीवगो >> - P. (35) अंदोलगो >> - P. (36) अंद्रगोप >> - P. (37) अंधकवृष्णि राजा का पुत्र गौतम कुमार >> - P. (38) अंधिल्लगो >> - P. (39) अंबिलजवागू >> - P. (40) अइरेगो >> - P. (41) अइसंपओगो >> - P. (42) अउंगउ-मुगउ >> - P. (43) अकसिणपवत्तगो >> - P. (44) अक्खाडगो >> - P. (45) अक्खायगो >> - P. (46) अगंडिगोह >> - P. (47) अगो >> - P. (48) अगोचर >> - P. (49) अगोचरनी गत्य >> - P. (50) अगोष >> - P. (51) अग्गतावसगोत्ते >> - P. (52) अग्गिवेससगोते >> - P. (53) अग्गोदयं >> - P. (54) अग्गोयर >> - P. (55) अग्गोवरयंकरेति >> - P. (56) अग्नि का लक्षण, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (57) अग्नि का लक्षण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (58) अग्नि की योनि उष्ण कैसे, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (59) अघृणित कुलों में गोचरी का निषेध >> - P. (60) अङगोपाङगनाम >> - P. (61) अजितनाथ-घरदेरासर जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (62) अज्जकालगो >> - P. (63) अज्जगो >> - P. (64) अज्जगोविंदो >> - P. (65) अज्जणग गोयमपुत्त >> - P. (66) अज्जमंगू >> - P. (67) अज्जुण गोमायुपुत्त >> - P. (68) अज्जुण गोयमपुत्त >> - P. (69) अट्टालगो >> - P. (70) अट्ठिलग्गो >> - P. (71) अट्ठिल्लगो >> - P. (72) अड्ढोरुगो >> - P. (73) अणाभोगो >> - P. (74) अणिगूहंतो >> - P. (75) अणिगूहियबलविरिए >> - P. (76) अणुओगो >> - P. (77) अणुजोगो >> - P. (78) अणुभागो >> - P. (79) अणुरंगो >> - P. (80) अणुलोमवाउवेगो >> - P. (81) अणुव्विग्गो >> - P. (82) अण्हायगो >> - P. (83) अतिवेगो >> - P. (84) अतिहिसंविभागो >> - P. (85) अद्दागो >> - P. (86) अद्धाणपवण्णगो >> - P. (87) अनंतनाथ जिनालय, नेमुभाईनी वाडी, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (88) अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वप्रथमवार कयुं सम्यक्त्व प्राप्त करे ?, लेखक - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (89) अनित्य निगोद >> - P. (90) अनित्यनिगोत >> - P. (91) अनुपगूहन >> - P. (92) अनुभागोदीरणा >> - P. (93) अनुयागो >> - P. (94) अनुयोग की प्रवृत्ति : गौ दृष्टांत >> - P. (95) अनुयोगद्वार - 1, 2 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - महावीर जैन विद्यालय, शुद्धिकार - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (96) अनेक लोगों ने नन्द की प्रशंसा की और वह हर्षित हुआ >> - P. (97) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (98) अपवरगो >> - P. (99) अब्भंगो >> - P. (100) अभग्गजोगो >> - P. (101) अभग्गो >> - P. (102) अभिओगो >> - P. (103) अभिओग्गो >> - P. (104) अभिमुखनामगोत्र >> - P. (105) अभिमुखनामगोत्रः >> - P. (106) अभिमुखनामगोत्रा >> - P. (107) अभियोगो >> - P. (108) अमग्गउ >> - P. (109) अमग्गो >> - P. (110) अयगोलो >> - P. (111) अयाती प्रकृतियों मे रस की तीव्रता-मंदता, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (112) अर्जुन गोमायुपुत्र >> - P. (113) अर्जुन गौतमपुत्र >> - P. (114) अर्जुनक गौतमपुत्र >> - P. (115) अर्थ और मानकरण की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (116) अर्धस्वर्गोत्कृष्ट >> - P. (117) अर्धस्वर्गोदय >> - P. (118) अवंगो >> - P. (119) अवइन्नगो >> - P. (120) अवगूढ >> - P. (121) अवगूहितो >> - P. (122) अवड्ढगोलावलिच्छाया >> - P. (123) अवद्धगाढलगोलछाया >> -

P. (124) अवद्धगोलच्छाया >> - P. (125) अवद्धगोलपुंजछाया >> - P. (126) अवधिज्ञान के सम्बन्ध में आनन्द और गौतम का संवाद >> - P. (127) अवाणगू >> - P. (128) अविओगो >> - P. (129) अव्वत्तलिंगो >> - P. (130) अश्व के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (131) असमणपाउग्गो >> - P. (132) असिलोगो >> - P. (133) अस्सादणसगोत्ते >> - P. (134) अहाभद्दगो >> - P. (135) अहियोगो >> - P. (136) आंगूं >> - P. (137) आंगूळी >> - P. (138) आउत्तगो >> - P. (139) आउयकम्मस्स संवट्टगो >> - P. (140) आकाशास्तिकायनो घनगोलक आकार, जिज्ञासा - सुव्रतचन्द्रविजय >> - P. (141) आकाशास्तिकायनो घनगोलक आकार, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय >> - P. (142) आकीर्ण और खलुंक अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (143) आख्यायक की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (144) आगंतुगो >> - P. (145) आगउ >> - P. (146) आगमिपल्लगो >> - P. (147) आजनी भूगोल - खगोल पर विमर्श >> - P. (148) आजावगो >> - P. (149) आजीविक तीर्थकर गोशालक का कथानक >> - P. (150) आज्ञा व्यवहार : गूढ़पदों में प्रतिसेवना-प्रायश्चित्त-कथन >> - P. (151) आत्म-पर के अंतकरादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (152) आत्मंभर-परंभर की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (153) आत्मगोचरा >> - P. (154) आत्मा कर्मनो कर्ता-भोक्ता व्यवहारथी केम ?, लेखक - सुव्रचचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (155) आत्मानुकंप-परानुकंप के भेद से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (156) आदेश्वर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (157) आदेश्वर (कांकरियानुं) जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (158) आदेश्वर - अष्टापद जिनालय, खपाटीया चकला, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (159) आदेश्वर जिनालय, काजीनुं मेदान, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (160) आदेश्वर जिनालय, गोदडनो पाडो, पाटण >> - P. (161) आदेश्वर जिनालय, छापरीया गोरी, महीधरपुरा , सुरत >> - P. (162) आदेश्वर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (163) आदेश्वर जिनालय, वागोळनो पाडो, पाटण >> - P. (164) आदेश्वर जिनालय, सुभाषचोक, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (165) आदेश्वर-घरदेरासर जिनालय, कायस्थ महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (166) आदेश्वर-घरदेरासर जिनालय, कायस्थ महोल्लो, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (167) आधुनिक भूगोल अने जैनधर्म >> - P. (168) आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान >> - P. (169) आनन्द स्थविर का भगवान के समक्ष गौशालक के वचनों का कथन और भगवान का किया हुआ समाधान >> - P. (170) आपात-संवास भद्र की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (171) आमोयगो >> - P. (172) आयारगोअर >> - P. (173) आयुष्य के अपवर्तन मे जीव का अनुभव, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (174) आरक्खिगो >> - P. (175) आर्तध्यान के स्वामी, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (176) आर्य-अनार्य की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (177) आलग्गो >> - P. (178) आलावगो >> - P. (179) आलिंगो >> - P. (180) आलोचनार्ह का व्यवहार : व्याध और गौ दृष्टांत >> - P. (181) आवआस (उप+गूह्) >> - P. (182) आवलियाठावगो >> - P. (183) आवश्यकसूत्र - मलयगिरीय टीका, भाग - 3 के मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (184) आवश्यकसूत्र की वृत्तियों की विभिन्न अर्थपरंपराएँ, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (185) आवश्यकसूत्र संदर्भे थोडीक जिज्ञासाओ, जिज्ञासा - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (186) आवश्यसूत्र - मलयगिरीय टीका, भाग - 2 के मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (187) आवागो >> - P. (188) आसंगो >> - P. (189) आसंसपओगो >> - P. (190) आस्रव और बंधहेतु में क्या फर्क है ?, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (191) आहारकशरीराङ्गोपाङ्ग >> - P. (192) आहारकाङ्गोपाङ्गनाम >> - P. (193) आहारगंगोवंगणाम >> - P. (194) आहेडगो >> - P. (195) इंदगोवए >> - P. (196) इंदगोवग >> - P. (197) इंदगोवय >> - P. (198) इंदगोवया >> - P. (199) इंदगोवेइ >> - P. (200) इंदणागो >> - P. (201) इंद्रभूति (गौतम) >> - P. (202) इंद्रभूति गौतम (गणधर) >> - P. (203) इक्ष्वाकुवंश, काश्यपगोत्र >> - P. (204) इतर निगोद >> - P. (205) इतरनिगोद >> - P. (206) इत्थीनामगोत्तं >> - P. (207) इन्द्रक निगोद >> - P. (208) इन्द्रगोपक >> - P. (209) इन्द्रभूति (गौतम गणधर) >> - P. (210) इन्द्रभूति गौतम कथा >> - P. (211) इन्द्रभूती गौतम >> - P. (212) इन्द्रिय के विषय बद्ध कैसे, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (213) इन्द्रियगोचरा >> - P. (214) इहलोगो >> - P. (215) इहार्थ-परार्थ की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (216) ईच्छादि योगो कया गुणठाणे ?, लेखक - सौम्यचन्द्रविजय >> - P. (217) ईर्यापथिकी आस्रव में कर्मबंध की स्थिति, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (218) ईहा अने अवग्रह - ज्ञान के दर्शन ?, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (219) उक्करिसियखग्गो >> - P. (220) उक्खित्तचरगो >> - P. (221) उक्खित्तविवेगो >> - P. (222) उगउ >> - P. (223) उगउमुगउ >> - P. (224) उगमुगउ >> - P. (225) उगहणंतगो >> - P. (226) उग्गोवणा >> - P. (227) उग्गोवेति >> - P. (228) उच्च गोत्र >> - P. (229) उच्च गोत्रकर्म >> - P. (230) उच्चगोत्र >> - P. (231) उच्चतायभयगो >> - P. (232) उच्चागोए >> - P. (233) उच्चागोत्ते >> - P. (234) उच्चैर्गोत्रः >> - P. (235) उच्छिन्नगोत्तागारं >> - P. (236) उच्यन्त अष्टौ\' पद मे संधि, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (237) उज्झितक के गोत्रास भव का कथानक >> - P. (238) उड्ढगो >> - P. (239) उत्तरगोग्रह >> - P. (240) उत्तरोष्ठादि रोगों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (241) उत्तान और गंभीर उदक के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (242) उत्पद्यमान चौबीसदंडकों में उत्पाद के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (243) उत्सर्गौत्सर्गसूत्रम् >> - P. (244) उदंतवाहगो >> - P. (245) उदायिमारगो >> - P. (246) उद्वर्तमानादि

चौबीसदंडकों में उद्वर्तन के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (247) उन्नत-प्रणत मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (248) उन्नत-प्रणत वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (249) उपगूहन >> - P. (250) उपगूहनं >> - P. (251) उपसर्गों में अविचलन : देवता द्वारा संहरण >> - P. (252) उमज्जायणसगोत्ते >> - P. (253) उमरवाडी पार्श्वनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (254) उम्मग्गनिम्मग्गो >> - P. (255) उम्मज्जगो >> - P. (256) उल्लपडसाडगो >> - P. (257) उवगूहिअ >> - P. (258) उवगो >> - P. (259) उवचरगो >> - P. (260) उवच्छगो >> - P. (261) उवधायपंडगो >> - P. (262) उवीलगो >> - P. (263) उस्सग्गो >> - P. (264) उस्साबिन्दूथिबुगो >> - P. (265) उस्सुगो >> - P. (266) ऊंडळगूंडळ >> - P. (267) ऊणगसयभागो >> - P. (268) ऊभंगउ >> - P. (269) ऊभगउ >> - P. (270) ऋजु वक्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (271) ऋजु वक्र वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (272) ऋद्धि गौरव >> - P. (273) ऋद्धिगौरव >> - P. (274) ऋषभदास निगोता >> - P. (275) ऋषिभद्रपुत्र सम्बन्धित गौतम का प्रश्न और भ. महावीर का उत्तर >> - P. (276) एक दूसरे के जंघादि के रोगो के परिकर्मो के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (277) एगउ >> - P. (278) एगाभोगो >> - P. (279) एगूरुय >> - P. (280) एगूरूता >> - P. (281) एगूरूयदीवे >> - P. (282) एगोदगं >> - P. (283) एगोरुय >> - P. (284) एगोरुया >> - P. (285) एगोरूय >> - P. (286) एयग्गो >> - P. (287) एलावच्चसगोत्तं >> - P. (288) औदारिक अंगोपांग >> - P. (289) औदारिक कामभोगों का >> - P. (290) औदारिकशरीरांगोपांगनाम >> - P. (291) औदारिकाङ्गोपाङ्गनाम >> - P. (292) कंगू >> - P. (293) कंगूया >> - P. (294) कंगूरों का वर्ण और प्रमाण >> - P. (295) कंड्गू >> - P. (296) कच्चे पक्के फल के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (297) कटगोला—नरसिंहपुर, उत्तरप्रदेश-बिहार-बंगाल >> - P. (298) कथागोष्ठी >> - P. (299) कर्मविषयक एक नवो उल्लेख, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (300) कलागोष्ठी >> - P. (301) कल्प विमानों में देवेन्द्रों द्वारा दिव्य भोगों के भोगने का प्ररूपण >> - P. (302) कल्पनागौरवम् >> - P. (303) कांगउ >> - P. (304) काचा गोरसयुक्त कठोळमां निगोद अने पंचेन्द्रिय जीवोनी उत्पत्ति !, लेखक - तीर्थतिलकविजय >> - P. (305) काम - भोगों में आसक्ति का निषेध >> - P. (306) काम-भोगों की अनित्यता >> - P. (307) कामभोगों का निदान और फलश्रुति >> - P. (308) कामभोगों में अनासक्त निर्ग्रन्थ >> - P. (309) कालोदाई आदि का गौतम के प्रति अस्तिकाय सम्बन्धि शंका का निरूपण >> - P. (310) काव्यगोष्ठी >> - P. (311) कुंढगोठि >> - P. (312) कुंथुनाथ जिनालय, गोपीपुरा, मेइन रोड , सुरत >> - P. (313) कुरंगो >> - P. (314) कूटागार के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (315) कूटागारशाला के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (316) कृश और दृढ़ की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (317) कृष्णगोपी विरहमेलापक भ्रमरगीता >> - P. (318) कृष्णगोपीविरहमेलापकफागु >> - P. (319) केवलज्ञानप्राप्ति के बाद कितने परीषह ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (320) केवलिसमुद्घात के स्वामी के विषय में मतांतर, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (321) केशिगौतमीय >> - P. (322) केशी गौतम चर्चा ठाल >> - P. (323) केशी गौतम चोपाई >> - P. (324) केशी गौतम चौढालिया >> - P. (325) केसिगोयमिज्ज >> - P. (326) केसी गोयम संधि >> - P. (327) कोरक के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (328) क्या तीर्थंकर भगवंत को भी देशना का परिश्रम होता है ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (329) क्या शरीर में बहता खून अचित होता है ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (330) क्या शरीर में बहता खून अचित होता है ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (331) क्रुद्ध गौशालक द्वारा फेंकी गई निष्फल तेजोलेश्या ने गौशालक को ही जलाया >> - P. (332) खगउड >> - P. (333) खग्गूड >> - P. (334) खेडिया-जगा-जगोजी >> - P. (335) गंधर्व गोरी >> - P. (336) गंधव गोरी >> - P. (337) गउ >> - P. (338) गउंछणउं >> - P. (339) गउख >> - P. (340) गउखु >> - P. (341) गउड >> - P. (342) गउड (गम्) >> - P. (343) गउडीय >> - P. (344) गउण >> - P. (345) गउयडइ >> - P. (346) गउर >> - P. (347) गउरउ >> - P. (348) गउरी >> - P. (349) गउसाउल्ल >> - P. (350) गति-अगति के लक्षण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (351) गन्धादि द्रव्य भावुक या अभावुक ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (352) गन्धादि द्रव्य भावुक या अभावुक ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (353) गरणां-गोर >> - P. (354) गर्भपातजन्य मृगापुत्र का रोगों से पीड़ित होना >> - P. (355) गामगोह >> - P. (356) गीतगोविंदादर्श >> - P. (357) गीतगोष्ठी >> - P. (358) गूंडां >> - P. (359) गूंफइ >> - P. (360) गूंहली >> - P. (361) गूख >> - P. (362) गूगलि >> - P. (363) गूगलीउ >> - P. (364) गूगळी >> - P. (365) गूगूलिया >> - P. (366) गूज >> - P. (367) गूजर >> - P. (368) गूजर-देस >> - P. (369) गूजर-वाइ >> - P. (370) गूजरडी >> - P. (371) गूजरी >> - P. (372) गूज्झ >> - P. (373) गूज्य >> - P. (374) गूझ >> - P. (375) गूझ्य >> - P. (376) गूडा >> - P. (377) गूडिय >> - P. (378) गूडी >> - P. (379) गूढ >> - P. (380) गूढगोचर >> - P. (381) गूढदंत >> - P. (382) गूढदत्त/गूढदन्त >> - P. (383) गूढात्मा >> - P. (384) गूढी >> - P. (385) गूणी >> - P. (386) गूतउ >> - P. (387) गूध >> - P. (388) गूयाडलनगर >> - P. (389) गूरज >> - P. (390) गूरि >> - P. (391) गूह >> - P. (392) गूहड >> - P. (393) गूहन >> - P. (394) गूढ़ विनोद >> - P. (395) गूढ़ब्रह्मचारी >> - P. (396) गो >> - P. (397) गो आदि के सम्बन्ध में असावद्य भाषा विधि >> - P. (398) गोंछ्ग >> - P. (399) गोंजल >> - P. (400) गोंजी >> - P. (401) गोंठी >> - P. (402) गोंड >> - P. (403) गोंडी >> - P.

(404) गोंदल >> - P. (405) गोंदलिय >> - P. (406) गोंदी >> - P. (407) गोंदीण >> - P. (408) गोअंगे >> - P. (409) गोअंट >> - P. (410) गोअग्गा >> - P. (411) गोअम >> - P. (412) गोअला >> - P. (413) गोआ >> - P. (414) गोआडइ >> - P. (415) गोआलिआ >> - P. (416) गोइ >> - P. (417) गोइक >> - P. (418) गोई गोसली >> - P. (419) गोउल >> - P. (420) गोकण्ण >> - P. (421) गोकर्ण >> - P. (422) गोकल >> - P. (423) गोकलि >> - P. (424) गोकळदास >> - P. (425) गोकिलंज >> - P. (426) गोकिलिंज >> - P. (427) गोकुल >> - P. (428) गोकुल - १ >> - P. (429) गोकुलचंद >> - P. (430) गोकुलदास >> - P. (431) गोकुलदास - २ >> - P. (432) गोकुलनाथजी >> - P. (433) गोकुलभाई >> - P. (434) गोकुलिस्थान >> - P. (435) गोक्षीर >> - P. (436) गोख >> - P. (437) गोखर >> - P. (438) गोखलक >> - P. (439) गोगवेश >> - P. (440) गोगिडउ >> - P. (441) गोगीडउ >> - P. (442) गोग्रास >> - P. (443) गोघर >> - P. (444) गोचर होय >> - P. (445) गोचर-अतिहार-प्रतिकमण >> - P. (446) गोचर: >> - P. (447) गोचरकाल >> - P. (448) गोचरचर्या >> - P. (449) गोचरचर्या के लिए निकले हुए गौतम का आनन्द के समक्ष आना >> - P. (450) गोचरभूमि >> - P. (451) गोचरवर्या >> - P. (452) गोचराग्र का अर्थ >> - P. (453) गोचरि >> - P. (454) गोचरी >> - P. (455) गोचरी में प्रविष्ट भिक्षु के आहार करने की विधि >> - P. (456) गोचरी वृत्ति >> - P. (457) गोचार >> - P. (458) गोच्चअ >> - P. (459) गोच्चिय >> - P. (460) गोच्छक विशे थोडीक विचारणा, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> - P. (461) गोच्छकादि के वितरण का विवेक >> - P. (462) गोच्छड >> - P. (463) गोच्छणव >> - P. (464) गोच्छय >> - P. (465) गोच्छा >> - P. (466) गोच्छुभ >> - P. (467) गोछउ >> - P. (468) गोजलोक >> - P. (469) गोजलोय >> - P. (470) गोजा >> - P. (471) गोज्ज >> - P. (472) गोज्झ >> - P. (473) गोज्झक्खिणी >> - P. (474) गोटको >> - P. (475) गोटिको >> - P. (476) गोटी >> - P. (477) गोट्ठ >> - P. (478) गोट्ठग >> - P. (479) गोट्ठमाहिल >> - P. (480) गोट्ठामाहिल >> - P. (481) गोट्ठामाहिल्ल >> - P. (482) गोट्ठिय >> - P. (483) गोट्ठी >> - P. (484) गोटचका >> - P. (485) गोठ >> - P. (486) गोठि >> - P. (487) गोठिय >> - P. (488) गोठिसे >> - P. (489) गोड >> - P. (490) गोडउ >> - P. (491) गोडा >> - P. (492) गोडिहिलियां >> - P. (493) गोडी >> - P. (494) गोडी छंद, स्वप्नाधिकार >> - P. (495) गोडी पार्श्व बृहत् स्तवन >> - P. (496) गोडी पार्श्व स्तवन >> - P. (497) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, नगरशेठनी पोळ, सुरत >> - P. (498) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, राळज, खंभात >> - P. (499) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय (अलग गभारो), कसुंबीयावाडो, पाटण >> - P. (500) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय (भोंयरामां), बोरपीपळो, खंभात >> - P. (501) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, आलीपोर, चीखली, नवसारी >> - P. (502) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, गोलवाड, पाटण >> - P. (503) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, गोळशेरी, महीधरपुरा, सुरत >> - P. (504) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, जमालपुर-टोकरशानी पोळ(प्रेरणा तीर्थ), अमदावाद >> - P. (505) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, नरोडा, अमदावाद >> - P. (506) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, मंगलपारेखनो खांचो, अमदावाद >> - P. (507) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, समेतिशखरनी पोळ , अमदावाद >> - P. (508) गोडी पार्श्वनाथ स्तवन >> - P. (509) गोडी पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (510) गोडी पास स्तवन >> - P. (511) गोडी प्रभु गीत >> - P. (512) गोडीदास >> - P. (513) गोडीप्रभु गीत >> - P. (514) गोड्ड >> - P. (515) गोड्डिका >> - P. (516) गोण >> - P. (517) गोणंद (नगर) >> - P. (518) गोणक >> - P. (519) गोणत्तय >> - P. (520) गोणपोतल >> - P. (521) गोणस >> - P. (522) गोणिक्क >> - P. (523) गोणिय >> - P. (524) गोणी >> - P. (525) गोण्ड >> - P. (526) गोतम >> - P. (527) गोति >> - P. (528) गोतिहर >> - P. (529) गोतिहाणी >> - P. (530) गोतिहिरउ >> - P. (531) गोती >> - P. (532) गोतीर्थ >> - P. (533) गोतीर्थ अने जलवृद्धिनो बे तरफथी देखाव >> - P. (534) गोतीहर >> - P. (535) गोत्त >> - P. (536) गोत्तफुसिया >> - P. (537) गोत्तास >> - P. (538) गोत्थुभ >> - P. (539) गोत्थुभग >> - P. (540) गोत्र >> - P. (541) गोत्र कर्म >> - P. (542) गोत्र के 2 भेद >> - P. (543) गोत्रकर्म >> - P. (544) गोत्रज >> - P. (545) गोत्रम् >> - P. (546) गोत्रास >> - P. (547) गोत्रास का मांस-भक्षण और नरक आदि के भव >> - P. (548) गोत्रासिया >> - P. (549) गोत्रिककर्म >> - P. (550) गोत्रिय >> - P. (551) गोत्वम् >> - P. (552) गोथुभ >> - P. (553) गोथूभ >> - P. (554) गोथूभा >> - P. (555) गोदड >> - P. (556) गोदडदास >> - P. (557) गोदत्ता >> - P. (558) गोदा >> - P. (559) गोदावरी >> - P. (560) गोदास >> - P. (561) गोदासगण >> - P. (562) गोदी >> - P. (563) गोदोहण >> - P. (564) गोदोहिका >> - P. (565) गोद्दह >> - P. (566) गोद्दहिल्ल >> - P. (567) गोध >> - P. (568) गोधउ >> - P. (569) गोधलु >> - P. (570) गोधसालक >> - P. (571) गोधा >> - P. (572) गोधिका >> - P. (573) गोधीका >> - P. (574) गोधूम >> - P. (575) गोधो >> - P. (576) गोधो (गोवर्धन) >> - P. (577) गोनस >> - P. (578) गोनिषध्या >> - P. (579) गोनिषध्यार्षपर्यंक >> - P. (580) गोनु >> - P. (581) गोनुं >> - P. (582) गोप >> - P. (583) गोपच्छेलक >> - P. (584) गोपाल >> - P. (585) गोपाल - १ >> - P. (586) गोपाल - ३ >> - P. (587) गोपाल - ४ >> - P. (588) गोपाल - ५ >> - P. (589) गोपाल हरि देशमुख >> - P. (590) गोपालअ >> - P. (591) गोपालक >> - P. (592) गोपालजी >> - P. (593) गोपालजी - १ >> - P. (594) गोपालदास >> - P. (595) गोपालदास - १ >> - P. (596) गोपालदास - २ >> - P. (597) गोपालदास - ४ >> - P. (598) गोपालदास - ५ >> - P.

(599) गोपालिक-महत्तर >> - P. (600) गोपालिका >> - P. (601) गोपालिका आर्या >> - P. (602) गोपालिका कथा >> - P. (603) गोपाली >> - P. (604) गोपाळ >> - P. (605) गोपाळदास >> - P. (606) गोपाळानंद >> - P. (607) गोपाविवा >> - P. (608) गोपिविउ >> - P. (609) गोपीकृष्ण >> - P. (610) गोपीभाण >> - P. (611) गोपुर >> - P. (612) गोपेन्द्र >> - P. (613) गोप्ता >> - P. (614) गोप्पी >> - P. (615) गोप्फण्ण >> - P. (616) गोप्य >> - P. (617) गोफण >> - P. (618) गोफणउ >> - P. (619) गोफणा >> - P. (620) गोफणि >> - P. (621) गोफणियो >> - P. (622) गोबर >> - P. (623) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, जिज्ञासा - राजहेमविजय >> - P. (624) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, समाधान - मलयगिरि-प्रेमहंसविजय >> - P. (625) गोबरे >> - P. (626) गोबहुल >> - P. (627) गोबहुल - विशेषण के नाम ?, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> - P. (628) गोब्बर >> - P. (629) गोब्बरगाम >> - P. (630) गोभद्र शेठ >> - P. (631) गोभद्र सेठ >> - P. (632) गोभूति >> - P. (633) गोमट >> - P. (634) गोमट्ट सार >> - P. (635) गोमट्ट सार बाला >> - P. (636) गोमट्टसार भाषाटीका >> - P. (637) गोमट्टसार वचनिका >> - P. (638) गोमती >> - P. (639) गोमतीबहेन >> - P. (640) गोमद्दा >> - P. (641) गोमय >> - P. (642) गोमय (गोबर) विषघाती >> - P. (643) गोमयकीटक >> - P. (644) गोमयकीडग >> - P. (645) गोमाऊ >> - P. (646) गोमाणसिया >> - P. (647) गोमानसिकाओं की संख्या >> - P. (648) गोमायु >> - P. (649) गोमायुपुत्त >> - P. (650) गोमायुपुत्र >> - P. (651) गोमिआ >> - P. (652) गोमिणी >> - P. (653) गोमिय >> - P. (654) गोमी >> - P. (655) गोमुख >> - P. (656) गोमुखमणि >> - P. (657) गोमुखी >> - P. (658) गोमुह >> - P. (659) गोमुहिय >> - P. (660) गोमुही >> - P. (661) गोमूत्रिका >> - P. (662) गोमूत्रिका गति >> - P. (663) गोमूत्रिकागति >> - P. (664) गोमूत्री >> - P. (665) गोमेद >> - P. (666) गोमेध >> - P. (667) गोमेह >> - P. (668) गोम्मि >> - P. (669) गोम्मी >> - P. (670) गोम्हि >> - P. (671) गोम्हिय >> - P. (672) गोम्ही >> - P. (673) गोय >> - P. (674) गोयम >> - P. (675) गोयमकेसिज्ज >> - P. (676) गोयमज्जिया >> - P. (677) गोयमपुत्त >> - P. (678) गोयमा >> - P. (679) गोयरउ >> - P. (680) गोयल >> - P. (681) गोयावरी >> - P. (682) गोयुत >> - P. (683) गोर >> - P. (684) गोरंफिडी >> - P. (685) गोरंभउ >> - P. (686) गोरक्खर >> - P. (687) गोरखनाथ (नाथपंथीसाधु) >> - P. (688) गोरखनाथ पावडी >> - P. (689) गोरगिरि >> - P. (690) गोरटुं >> - P. (691) गोरड >> - P. (692) गोरडित >> - P. (693) गोरडी >> - P. (694) गोरति >> - P. (695) गोरथ >> - P. (696) गोरथक >> - P. (697) गोरप्पडिआ >> - P. (698) गोरमिग >> - P. (699) गोरव >> - P. (700) गोरवु >> - P. (701) गोरस गोली >> - P. (702) गोरसभावित क्षेत्र उत्कृष्ट क्यों? >> - P. (703) गोरह >> - P. (704) गोरहग >> - P. (705) गोरा >> - P. (706) गोरा बादल कथा >> - P. (707) गोरा बादल कथा अथवा पद्मिनी चौपई >> - P. (708) गोरा बादल की रात >> - P. (709) गोरा बादल वात >> - P. (710) गोराबादल कथा >> - P. (711) गोराबादल वात >> - P. (712) गोरिग >> - P. (713) गोरिहिअ >> - P. (714) गोरी >> - P. (715) गोरी प्रभूति के कथानक संक्षेप >> - P. (716) गोरी-सांवलीविवाहगीत >> - P. (717) गोरी-सांवलीसंवाद >> - P. (718) गोरू >> - P. (719) गोरूचंदन >> - P. (720) गोरे >> - P. (721) गोर्बरग्राम >> - P. (722) गोल >> - P. (723) गोल डिब्बों में जिन-अस्थियाँ >> - P. (724) गोल विमान >> - P. (725) गोलउ >> - P. (726) गोलओ >> - P. (727) गोलक >> - P. (728) गोलणी >> - P. (729) गोलव्यायन >> - P. (730) गोलव्वायण >> - P. (731) गोला >> - P. (732) गोलांटां >> - P. (733) गोलि >> - P. (734) गोलिका >> - P. (735) गोलिकायण >> - P. (736) गोलिकायन >> - P. (737) गोलिय >> - P. (738) गोलिया >> - P. (739) गोलियालिंग >> - P. (740) गोलियालिंछ >> - P. (741) गोली >> - P. (742) गोलीडां >> - P. (743) गोलुकि >> - P. (744) गोलों का रूपक >> - P. (745) गोलोम >> - P. (746) गोलोमन् >> - P. (747) गोल्य >> - P. (748) गोल्ल >> - P. (749) गोल्ला >> - P. (750) गोल्ह >> - P. (751) गोल्हा >> - P. (752) गोल्ही >> - P. (753) गोळीडां >> - P. (754) गोव >> - P. (755) गोवत्स >> - P. (756) गोवर >> - P. (757) गोवरपीठ >> - P. (758) गोवर्धन - ५ >> - P. (759) गोवर्तिक >> - P. (760) गोवर्धन >> - P. (761) गोवर्धन (सूरि) >> - P. (762) गोवर्धन - २ >> - P. (763) गोवर्धन - ३ >> - P. (764) गोवर्धन - ४ >> - P. (765) गोवर्धन - ७ >> - P. (766) गोवलिया >> - P. (767) गोवल्लायण >> - P. (768) गोवल्लायन >> - P. (769) गोवल्ली >> - P. (770) गोवळ >> - P. (771) गोवहिया >> - P. (772) गोवांदरे >> - P. (773) गोवाल >> - P. (774) गोवालिय-महत्तर >> - P. (775) गोवालिया >> - P. (776) गोवाली >> - P. (777) गोवाळ >> - P. (778) गोविंद >> - P. (779) गोविंद (मुनि) >> - P. (780) गोविंद - १ >> - P. (781) गोविंद - २ >> - P. (782) गोविंद - ३ >> - P. (783) गोविंद - ४ >> - P. (784) गोविंद गिल्लाभाई >> - P. (785) गोविंद भिक्षु कथा >> - P. (786) गोविंद वाचक कथा >> - P. (787) गोविंद सिंह >> - P. (788) गोविंदजी >> - P. (789) गोविंदणिज्जुत्ति >> - P. (790) गोविंददत्त >> - P. (791) गोविंददास >> - P. (792) गोविंददास - १ >> - P. (793) गोविंददास - २ >> - P. (794) गोविंददास - ३ >> - P. (795) गोविंदब्राह्मण कुमारस्वर >> - P. (796) गोविंदराम >> - P. (797) गोविंदराम(महाराज) >> - P. (798) गोविंदरास >> - P. (799) गोविंदवायग >> - P. (800) गोविंदाचार्य >> - P. (801) गोविंदो >> - P. (802) गोविअ >> - P. (803) गोविन्द >> - P. (804) गोविन्द राजा >> - P. (805) गोविन्दचन्द्र (गहड़बाल नृपति) >> - P. (806)

गोविन्दनिर्युक्ति >> - P. (807) गोविन्दवाचक >> - P. (808) गोविन्दाचार्य >> - P. (809) गोविल्ल >> - P. (810) गोवी >> - P. (811) गोवृत्तिक >> - P. (812) गोवृषमुद्रा >> - P. (813) गोव्यंद >> - P. (814) गोव्वतिअ >> - P. (815) गोव्वर >> - P. (816) गोशपेच >> - P. (817) गोशाल >> - P. (818) गोशालक >> - P. (819) गोशालक का आगमन >> - P. (820) गोशालक ने अपने आपको जिन कहा >> - P. (821) गोशालक ने कहा-शीतोदग आदिके सेवन में पाप नहीं है >> - P. (822) गोशालक ने छ अनतिक्रमणीयों का परुपण किया >> - P. (823) गोशालक ने भ. महावीर के गुणगान किये >> - P. (824) गोशालो >> - P. (825) गोशीर्ष >> - P. (826) गोष्ट >> - P. (827) गोष्ठ >> - P. (828) गोष्ठा >> - P. (829) गोष्ठामाहिल >> - P. (830) गोष्ठामाहिल (निन्हव) >> - P. (831) गोष्ठामाहिल और अबद्धिकवाद >> - P. (832) गोष्ठामाहिल नि...व कथा >> - P. (833) गोष्ठिकों ने अर्जुनमालाकार को बांधा और बन्धुमति भार्या के साथ अनाचार किया >> - P. (834) गोष्ठी >> - P. (835) गोष्ठीवाद >> - P. (836) गोस >> - P. (837) गोसंखडी >> - P. (838) गोसंखि >> - P. (839) गोसग्ग >> - P. (840) गोसङ्खिन् >> - P. (841) गोसण्ण >> - P. (842) गोसर्ग >> - P. (843) गोसामी >> - P. (844) गोसाल >> - P. (845) गोसाविआ >> - P. (846) गोसिय >> - P. (847) गोसीर्ष >> - P. (848) गोस्तुभ >> - P. (849) गोस्तूप >> - P. (850) गोस्तूप आवासपर्वत की अवस्थिति और प्रमाण >> - P. (851) गोस्तूप आवासपर्वत के नाम का हेतु >> - P. (852) गोस्तूप के चरमान्त से वलयामुख महापाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर >> - P. (853) गोस्तूप राजधानी >> - P. (854) गोस्तूपा >> - P. (855) गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों से वलयामुखादि महापाताल कलशों के चरमान्तों का अन्तर >> - P. (856) गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों से वलयामुखादि महापाताल कलशों के मध्य भागों का अन्तर >> - P. (857) गोह >> - P. (858) गोहट्ठाण >> - P. (859) गोहडिय >> - P. (860) गोहत्तण >> - P. (861) गोहर्य >> - P. (862) गोहली >> - P. (863) गोहली, राजस्थान >> - P. (864) गोहातक >> - P. (865) गोहिया >> - P. (866) गोही >> - P. (867) गोहीरउ >> - P. (868) गोहुं >> - P. (869) गोहुर >> - P. (870) गोहू >> - P. (871) गौ >> - P. (872) गोड़ी पार्श्व स्तवन >> - P. (873) गोड़ी पार्श्वनाथ सार्द्ध शताब्दी स्मारक ग्रन्थ >> - P. (874) गौ अलीक >> - P. (875) गौ का दृष्टांत >> - P. (876) गौड >> - P. (877) गौडी छंद >> - P. (878) गौडी पार्श्वनाथ संबंध >> - P. (879) गौडी पार्श्वनाथ स्तवन >> - P. (880) गौडी प्रभुगीत >> - P. (881) गौडीदास >> - P. (882) गौडीपार्श्व स्तव >> - P. (883) गौडीपार्श्वनाथ छंद >> - P. (884) गौडीपास स्तवन >> - P. (885) गौण >> - P. (886) गौण काल >> - P. (887) गौण प्रत्यक्ष >> - P. (888) गौणप्रयोजनम् >> - P. (889) गौणात्मा >> - P. (890) गौणीवृत्ति >> - P. (891) गौण्य >> - P. (892) गौतम >> - P. (893) गौतम - २ >> - P. (894) गौतम और अतिमुक्त कुमार का संवाद >> - P. (895) गौतम का गौशालक की चर्या जानने के लिए कहना >> - P. (896) गौतम का देवताओं के समीप जाना >> - P. (897) गौतम का प्रश्न. भगवान का उत्तर >> - P. (898) गौतम का महाशतक के पास जाना >> - P. (899) गौतम का लौट जाना >> - P. (900) गौतम की भिक्षाचर्या >> - P. (901) गौतम कुमार >> - P. (902) गौतम कुलक बाला. >> - P. (903) गौतम कुलक वृत्ति >> - P. (904) गौतम के पूछने पर भ. महावीर ने दर्दुरदेव के पूर्व भव का नन्द मणियार का कथानक कहा >> - P. (905) गौतम के समीप प्रश्न के लिए प्राश्र्वापत्यश्रमण उदकपेढाल पुत्र का आना >> - P. (906) गौतम गणधर >> - P. (907) गौतम द्वारा क्षमा याचना >> - P. (908) गौतम द्वीप का वर्णन >> - P. (909) गौतम ने उज्झितक के पूर्व भव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (910) गौतम ने काली देवी के पूर्वभव की पृच्छा की >> - P. (911) गौतम ने कालोदाई आदि की शंकाओं का समाधान किया >> - P. (912) गौतम ने महाशतक को \' प्रायश्चित करने का \' भगवन्त का कथन कहा >> - P. (913) गौतम ने मृगापुत्र के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (914) गौतम ने मृगापुत्र को देखा >> - P. (915) गौतम ने स्कंदक का स्वागत किया और स्कंदक ने अपने आने का कारण कहा >> - P. (916) गौतम पृच्छा >> - P. (917) गौतम पृच्छा चौपई >> - P. (918) गौतम पृच्छा बाला. >> - P. (919) गौतम पृच्छा स्तवन >> - P. (920) गौतम प्रश्नोत्तर स्तवन >> - P. (921) गौतम रास >> - P. (922) गौतम स्वामी (गणधर) >> - P. (923) गौतम स्वामी छद >> - P. (924) गौतम स्वामी रास >> - P. (925) गौतम स्वामी संज्झाय >> - P. (926) गौतम स्वामी स्वाध्याय >> - P. (927) गौतमकुलक बालावबोध >> - P. (928) गौतमकुलक स्तबक >> - P. (929) गौतमकेशीय >> - P. (930) गौतमगणधर >> - P. (931) गौतमद्वीप के नाम का हेतु >> - P. (932) गौतमपुत्र >> - P. (933) गौतमपृच्छा >> - P. (934) गौतमपृच्छा चोपाई >> - P. (935) गौतमपृच्छा बालावबोध >> - P. (936) गौतमपृच्छा बालावबोध, राजप्रश्नीय बालावबोध >> - P. (937) गौतमपृच्छा विवरण >> - P. (938) गौतमपृच्छा,अनुत्तरोपपातिकसूत्र बालावबोध >> - P. (939) गौतमपृच्छाचौपाइ >> - P. (940) गौतमपृच्छानुं स्तवन >> - P. (941) गौतमपृच्छाबालावबोध >> - P. (942) गौतममुनि कथा >> - P. (943) गौतमरास >> - P. (944) गौतमरास (मरु-गुर्जर की रचना) >> - P. (945) गौतमविजय >> - P. (946) गौतमस्वामी को केवल ज्ञान >> - P. (947) गौतमस्वामी नो रास >> - P. (948) गौतमस्वामी रास >> - P. (949) गौतमस्वामी स्वाध्याय >> - P. (950) गौतमस्वामी- रास >> - P. (951) गौतमस्वामीगीत >> - P. (952) गौतमस्वामीगीतछन्द >> - P. (953) गौतमस्वामीनी सझाय >> - P. (954) गौतमस्वामीनो रास >> - P. (955) गौतमस्वामीनो रास >> - P. (956) गौतमस्वामीरास >> - P. (957) गौतमी >> - P. (958) गौतमीया >> - P. (959) गौधेन >> - P. (960) गौपद >> - P. (961) गौरखर >> - P. (962) गौरगिरि >> - P.

(963) गौरमुण्ड >> - P. (964) गौरमृग >> - P. (965) गौरव >> - P. (966) गौरव दान >> - P. (967) गौरवदास (कवि) >> - P. (968) गौरवम् >> - P. (969) गौरववन्दनक >> - P. (970) गौरववन्दनादोष >> - P. (971) गौरिक >> - P. (972) गौरिकूट >> - P. (973) गौरी >> - P. (974) गौरी कथा >> - P. (975) गौरीबाई >> - P. (976) गौरीराणी >> - P. (977) गौव >> - P. (978) गौशालक और भ. महावीर ने परस्पर एक दूसरे की मरणकाल मर्यादा का निरूपण किया >> - P. (979) गौशालक का अपने मरने के बाद निहरण के सम्बन्ध में निर्देश >> - P. (980) गौशालक का आनन्द स्थविर के समक्ष अर्थलुब्धवणिक का दृष्टांत कहकर आक्रोश दिखाना >> - P. (981) गौशालक का ईर्ष्याभाव >> - P. (982) गौशालक का निहरण >> - P. (983) गौशालक का पृथक संघ >> - P. (984) गौशालक का भगवान के प्रति आक्रोश वचन कहकर स्वसिद्धान्त निरूपण करना >> - P. (985) गौशालक का भी तन्तुशाला में आगमन >> - P. (986) गौशालक का महापदमभव में जन्म और राज्याभिषेक >> - P. (987) गौशालक का सम्यक्त्व परिणाम-पूर्वक कालधर्म >> - P. (988) गौशालक की तेजोलेश्या सिद्धि >> - P. (989) गौशालक की मंखचर्या >> - P. (990) गौशालक के जीव की देवलोक में उत्पत्ति >> - P. (991) गौशालक के वचन से क्रुद्ध वैश्यायन के वचन गौशालक के उपर तेजोलेश्या फेंकी >> - P. (992) गौशालक जीव के दृढ़प्रतिज्ञ भव से सिद्धगति का निरूपण >> - P. (993) गौशालक जीव विमलवाहन के अनेक दु:ख प्रचुर भव और बाद में देव भव >> - P. (994) गौशालक ने सर्वानुभूति मुनि को भस्म कर दिया >> - P. (995) गौशालक ने सुनक्षत्र मुनि को भी मार दिया >> - P. (996) गौशील >> - P. (997) गौश्रृंग >> - P. (998) गौसर्गिककाल >> - P. (999) गौड़पिंगल >> - P. (1000) गौड़ी पार्श्व वृहत् स्तव >> - P. (1001) गौड़ी पार्श्व स्तव अथवा काजल मेधानुं स्तव >> - P. (1002) गौड़ी पार्श्व स्तवन >> - P. (1003) गौड़ी पार्श्वनाथ छंद >> - P. (1004) गौड़ी पार्श्वनाथ स्तव अथवा मेघ काजल संवाद नुं स्तवन >> - P. (1005) गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन >> - P. (1006) गौड़ी स्तवन >> - P. (1007) ग्यारह अंगो का निर्यूहण >> - P. (1008) घयगोलीय >> - P. (1009) घाणेन्द्रियरागोपरति >> - P. (1010) चंगोड >> - P. (1011) चंद्रप्रभु जिनालय (अलग गभारो), गोदडनो पाडो, पाटण >> - P. (1012) चंद्रप्रभुस्वामी जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1013) चंद्रप्रभुस्वामी जिनालय, गोळशेरी, महीधरपुरा, सुरत >> - P. (1014) चंद्रप्रभुस्वामी-घरदेरासर जिनालय, गोपीपुरा, मेइन रोड , सुरत >> - P. (1015) चंपा पार्श्वनाथ जिनालय, वचली शेरी, गोलवाड, पाटण >> - P. (1016) चक्षु:प्राप्यकारिता ?, पत्रचर्चा - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1017) चक्षु:प्राप्यकारिता ?, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1018) चक्षुरिन्द्रिय का परिमाण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1019) चक्षुरिन्द्रिय रागोपरति >> - P. (1020) चटाई के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1021) चतुर्गति निगोद >> - P. (1022) चतुर्गतिनिगोद >> - P. (1023) चतुर्थ भावना : पूर्व मुक्त भोगों के स्मरण का निषेध >> - P. (1024) चिंतामणि पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1025) चित्र अने संभूति, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1026) छह प्रकार की गोचरी >> - P. (1027) जंगोटो >> - P. (1028) जंगोल >> - P. (1029) जंघादि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1030) जंबूद्वीपमां रहेल वृत (गोल) पदार्थोनुं यंत्र >> - P. (1031) जम्बूद्वीप के चरमान्त से गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों का अन्तर >> - P. (1032) जरगो >> - P. (1033) जरगोजी >> - P. (1034) जाति आदि के वृषभ के दृष्टांत द्वारा युक्त-अयुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1035) जाति-कुल-बल-रूप और जय संपन्न अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1036) जाति-कुल-बल-रूप-श्रुत और शील की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1037) जिगोषु >> - P. (1038) जिनदास गोधा >> - P. (1039) जीवराम अजरामर गौर >> - P. (1040) जीवसमास - सवृत्ति (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जैन ग्रंथ प्रकाशन समिति, शुद्धिकार - कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1041) जोगउ >> - P. (1042) जोधराज गोधीका >> - P. (1043) ज्ञानोत्पादन-प्रकिया, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1044) ठवियगो >> - P. (1045) ठागो >> - P. (1046) ठामि काउस्सग्गं में नयविचारणा, लेखक - कुमुदचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1047) ठिएपागो >> - P. (1048) डागो >> - P. (1049) णंगोल >> - P. (1050) णंगोला >> - P. (1051) णंगोलाभंगसिरोधरे >> - P. (1052) णंगोलि >> - P. (1053) णंगोलिय >> - P. (1054) णंगोलियदीवे >> - P. (1055) णंगोलिया >> - P. (1056) णंदगोव >> - P. (1057) णंदियगो >> - P. (1058) णग्गोघपरिमंडलं >> - P. (1059) णग्गोर >> - P. (1060) णग्गोह >> - P. (1061) णग्गोहमंडले >> - P. (1062) णतावगोज्जोआ >> - P. (1063) णांगोली >> - P. (1064) णागरगो >> - P. (1065) णागोद >> - P. (1066) णिओगो >> - P. (1067) णिगोद >> - P. (1068) णिगोय >> - P. (1069) णिग्गू >> - P. (1070) णिग्गोहवरपायव >> - P. (1071) णियगो >> - P. (1072) णिरुद्धपरियागो >> - P. (1073) णिल्लेवगो >> - P. (1074) णिव्विण्णकामभोगो >> - P. (1075) णिसेगो >> - P. (1076) ण्हाणगोल्लो >> - P. (1077) तंगोटी >> - P. (1078) तणहारिगो >> - P. (1079) तत्स्वभाव\' शब्द मे ट्यण् प्रत्यय पर वृद्ध्यभाव, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1080) तमोवाद, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1081) तरतमजोगो >> - P. (1082) तवोमग्गो >> - P. (1083) तहिंगोलं >> - P. (1084) तिगिच्छायणसगोत्ते >> - P. (1085) तियभंगो >> - P. (1086) तिल के पौधे के सम्बन्ध में भगवान के वचन गौशालक की अश्रद्धा >> - P. (1087) तिलहारगकपट्ठगो >> - P. (1088) तिवग्गो >> - P. (1089) तीर्थंकरनामगोत्र का बंध >> - P. (1090) तीर्थंकरनामगोत्रं >> - P. (1091) तीर्थसिद्ध-अतीर्थसिद्ध, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1092) तुत्तगो >> - P.

(1093) तेजोलेश्या के दाह से पीड़ित गौशालक ने मद्यपान आदि किये >> - P. (1094) तेषां नतोऽहं क्रमान्\' वाक्य मे नम् को क्तप्रत्यय, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1095) त्रागउ >> - P. (1096) थालीपागो >> - P. (1097) थिबुगो >> - P. (1098) दंडपासगो >> - P. (1099) दगमग्गो >> - P. (1100) दघच्चिन्मात्रविश्रान्तिं/विश्रान्तिर्, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1101) दभियायणस्सगोते >> - P. (1102) दमगो >> - P. (1103) दव्वाभिओगो >> - P. (1104) दशरय निगोत्या >> - P. (1105) दाइगो >> - P. (1106) दामण्णगो >> - P. (1107) दारगोउर >> - P. (1108) दाहकालिगो >> - P. (1109) दिट्ठंतपरिणामगो >> - P. (1110) दिन में या रात्रि में ग्रहण किये गये गोबर के लेप के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1111) दिवसभयगो >> - P. (1112) दिव्य कामभोगों का >> - P. (1113) दिसिविभागो >> - P. (1114) दिह्वेन्द्रियरागोपरति >> - P. (1115) दीन-अदीन परिणति आदि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1116) दुगूल >> - P. (1117) दुगोण >> - P. (1118) दुगोत्तफुसिया >> - P. (1119) दुग्गूढं >> - P. (1120) दुर्गो >> - P. (1121) दुल्ललियगोट्ठी >> - P. (1122) दुवग्गोवि >> - P. (1123) देव और सर्वज्ञ की सिद्धि के अनुमान, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1124) देवजण्णगो >> - P. (1125) देवज्जगो >> - P. (1126) देवयाभिओगो >> - P. (1127) देवानन्दा का यह रूप देखकर गौतमस्वामी ने प्रश्न किया और भ. महावीर ने समाधान किया >> - P. (1128) देवों के संयतत्वादि के पूछने पर भगवान द्वारा गौतम का समाधान >> - P. (1129) देवों को 900-1000 योजन तक कैसे गंध आती है, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1130) देशविरत श्रावक कोने कहेवो ?, लेखक - सुव्रचचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1131) दोगुंदगो >> - P. (1132) दोहणवाडगो >> - P. (1133) द्रव्येंद्रियना भेदो अने तेनी व्याख्या, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1134) द्वादशांगीनी नित्यानित्यता, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1135) द्वित्वादि अनेकस्थ धर्म, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1136) धणंजयसगोत्ते >> - P. (1137) धणगोत्र >> - P. (1138) धणगोव >> - P. (1139) धणसंताणगो >> - P. (1140) धनगोप >> - P. (1141) धम्मकरगो >> - P. (1142) धम्मदेसगो >> - P. (1143) धरणिगोयरो >> - P. (1144) धर्मनाथ जिनालय, हाथीवाळुं देरासर, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1145) धिम्मरगो >> - P. (1146) नंदगोवं >> - P. (1147) नंदिमुयंगो >> - P. (1148) नउलगो >> - P. (1149) नकुलोपगूहं >> - P. (1150) नक्षत्रों का पूर्वादिभागों से योग क्षेत्र और काल प्रमाण >> - P. (1151) नक्षत्रों के गोत्र >> - P. (1152) नखाग्र भागों के परिकर्म का प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1153) नगरगोत्तिय >> - P. (1154) नगरगोयर >> - P. (1155) नगोदर >> - P. (1156) नग्गयमग्गो >> - P. (1157) नग्गोधो >> - P. (1158) नग्गोह >> - P. (1159) नग्गोहमंथुं >> - P. (1160) नङ्गोलिन् >> - P. (1161) नन्द के रोगों की वैद्यों द्वारा की गई चिकित्सा निष्फल गई >> - P. (1162) नन्द के रोगोत्पति >> - P. (1163) नन्दगोप >> - P. (1164) नवकारना पंचपद पर,अंगोपांग अने चरणसित्तरी करणसित्तरी पर सझायो >> - P. (1165) नाईवग्गो >> - P. (1166) नागउर >> - P. (1167) नागोद >> - P. (1168) नागोदर >> - P. (1169) नागोर, राजस्थान >> - P. (1170) नाङ्गोल >> - P. (1171) नाङ्गोलिक >> - P. (1172) नाणाविरागो >> - P. (1173) नानूगोधा >> - P. (1174) नाम गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति >> - P. (1175) नाम गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति >> - P. (1176) नाम-गोत्र कर्म >> - P. (1177) नामगोत्त >> - P. (1178) नामगोयं >> - P. (1179) नामागोयं >> - P. (1180) नायगो >> - P. (1181) नालगोला >> - P. (1182) नाळगोळा >> - P. (1183) निगूदतर्क >> - P. (1184) निगूहिता >> - P. (1185) निगोत >> - P. (1186) निगोद >> - P. (1187) निगोद इतर >> - P. (1188) निगोद जीव >> - P. (1189) निगोद नित्य >> - P. (1190) निगोद विचार गीत >> - P. (1191) निगोद शरीर >> - P. (1192) निगोदजीव >> - P. (1193) निगोददु:ख खगर्भित सीमंधर स्तवन >> - P. (1194) निगोदना गोलानुं स्वरुप >> - P. (1195) निगोदनी स्वकायस्थिति, जिज्ञासा - सुव्रतचन्द्रविजय >> - P. (1196) निगोदर >> - P. (1197) निगोदविचारगर्भित महावीर स्तवन >> - P. (1198) निगोदशरीर >> - P. (1199) निगोदा >> - P. (1200) निगोध >> - P. (1201) निगोयजीवा >> - P. (1202) निग्गमगो >> - P. (1203) निग्गोहपरिमंडलसंठाणनाम >> - P. (1204) निग्गोहमंडल >> - P. (1205) निग्गोहवणे >> - P. (1206) निच्चुव्विग्गो >> - P. (1207) निजोगो >> - P. (1208) नित्यनिगोत >> - P. (1209) नित्यनिगोद >> - P. (1210) नित्यभोजी और तपस्वी : गोचरकाल >> - P. (1211) निमग्गो >> - P. (1212) निमित्त उल्लोगो >> - P. (1213) निरंतरगो >> - P. (1214) निरुवसग्गो >> - P. (1215) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के उत्तरोष्ठादि रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1216) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के जंघा आदि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1217) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1218) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1219) निवन्ननिवन्नगो >> - P. (1220) निष्कृष्ट-अनिष्कृष्ट के भेद से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1221) निस्संगो >> - P. (1222) निहाल बावनी अथवा गूढ़ा बावनी >> - P. (1223) नीच गोत्र >> - P. (1224) नीच गोत्र के आस्रव >> - P. (1225) नीच गोत्रकर्म >> - P. (1226) नीचगोत्र >> - P. (1227) नीचैर्गोत्र >> - P. (1228) नीय गोय >> - P. (1229) नृत्यगोष्ठी >> - P. (1230) नेड्डवालगो >> - P. (1231) नेमिनाथ जिनालय (उपरना माळे), गोदडनो पाडो, पाटण >> - P. (1232) नेमिनाथ जिनालय, काजीनुं मेदान, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1233) नो भागों में प्रत्याख्यान के विषय-दिखाना >> - P. (1234) नोगौण >> - P. (1235) नोगौण्य पद >> - P. (1236) पक्षी के दृष्टांत द्वारा

स्वर और रूप की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1237) पग गोपाविवा >> - P. (1238) पजगो >> - P. (1239) पडिल (भ) ग्गो >> - P. (1240) पडिलग्गो >> - P. (1241) पत्तों आदि से युक्त वृक्ष के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1242) पत्थारपसंगो >> - P. (1243) पत्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1244) पदगोष्ठी >> - P. (1245) पद्मिनी चरित्र अथवा गोराबादल चौपई >> - P. (1246) पनगो >> - P. (1247) पर गोलओ >> - P. (1248) परमाधामी मरकर अंडगोलिक मनुष्य बनते है >> - P. (1249) परिगोह >> - P. (1250) परिज्ञात-अपरिज्ञात की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1251) परिभोगैषणा-विवेक : आर्य मांगू-समुद्र दृष्टांत >> - P. (1252) पलिगोव >> - P. (1253) पवित्र-अपवित्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1254) पवित्र-अपवित्र वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1255) पव्वगो >> - P. (1256) पहीणगोत्तागार >> - P. (1257) पागोहरी >> - P. (1258) पाडुंगोरि >> - P. (1259) पाणगोरि >> - P. (1260) पायगो >> - P. (1261) पारेवयगोवा >> - P. (1262) पार्श्वचन्द्र (नागोरीतपागच्छीय) >> - P. (1263) पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, मोती पोळ, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1264) पिंगायणसगोत्त >> - P. (1265) पुत्तगो >> - P. (1266) पुत्र का \' गोत्रास \' नाम दिया >> - P. (1267) पुद्गल परमाणुओं का बन्ध देश से होता है या सर्व से ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1268) पुलाक भक्त ग्रहण हो जाने पर गोचरी जाने का विधि-निषेध >> - P. (1269) पुष्प के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के रूप शील संपन्नता के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1270) पुसागो >> - P. (1271) पुस्सायणसगोत्त >> - P. (1272) पूर्ण-तुच्छ कुंभ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1273) पृथ्वियों के नाम-गोत्र >> - P. (1274) पृथ्वी दडा जेवी गोल नथी >> - P. (1275) प्रतिबिंब की पर्यालोचना, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1276) प्रत्येक मुहूर्त में नक्षत्र द्वारा मण्डल के भागों में गमन >> - P. (1277) प्रत्येक मुहूर्त में मण्डल के भागों में गति के प्रमाण का प्ररूपण >> - P. (1278) प्रत्येक मुहूर्त में मण्डल के भागों में चन्द्र की गति का प्रमाण >> - P. (1279) प्रागो >> - P. (1280) प्रेक्षणगोष्ठी >> - P. (1281) बंधणप्पओगो >> - P. (1282) बग्गोल (रोसन्थय) >> - P. (1283) बदगो >> - P. (1284) बलद्दसंघाडगो >> - P. (1285) बादर निगोदद्रव्यवर्गणा >> - P. (1286) बादर निगोदप्रतिष्ठित >> - P. (1287) बादरनिगोद >> - P. (1288) बालिंदगोवेइ >> - P. (1289) बालेंदगोवे >> - P. (1290) बे वखत वैक्रियसमुद्घात, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1291) भ. अरिष्टनेमि का धर्मोपदेश और गौतम की प्रव्रज्या >> - P. (1292) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गौतम आदि अणगार >> - P. (1293) भ. महावीर कथित गौशालक का अजिनत्व >> - P. (1294) भ. महावीर कथित तिल के पौधे को देखकर गौशालक का चले जाना >> - P. (1295) भ. महावीर का समवसरण और गौतम का गौचरी जाना >> - P. (1296) भ. महावीर की जीवनचर्या के सम्बन्ध में गोशालक का आक्षेप >> - P. (1297) भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न >> - P. (1298) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने अभग्नसेन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1299) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने उम्बरदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1300) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने देवदत्ता के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1301) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने नन्दिवर्धन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1302) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने बृहस्पतिदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1303) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने सूर्यदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> - P. (1304) भ. महावीर के साथ विवाद करने में गोशालक का असामर्थ्य और उसका लौट जाना >> - P. (1305) भ. महावीर ने गौतम के मनोगत भाव कहे >> - P. (1306) भ. महावीर ने गौतम को गौशालक के चरित्र का पूर्व भाग कहा >> - P. (1307) भ. महावीर ने गौतम को स्कंदक के आगमन की सुचना दी >> - P. (1308) भ. महावीर ने गौशालक की रक्षा के लिए शीतलेश्या फेंकी >> - P. (1309) भ. महावीर ने गौशालक के वचनों का प्रतिकार किया >> - P. (1310) भ. महावीर ने गौशालक को छोड़ने का निषेध किया >> - P. (1311) भ. महावीर ने गौशालक को हितशिक्षा के वचन कहे >> - P. (1312) भंगोठण >> - P. (1313) भंगोपदर्शन >> - P. (1314) भगवान के कहने से गौशालक से प्रश्न किये >> - P. (1315) भगवान के प्रति गौशालक का पुन : आक्रोश >> - P. (1316) भगवान गौतम का उत्तर >> - P. (1317) भगवान गौतम का प्रत्युत्तर >> - P. (1318) भगवान ने गौतम की शंका का निराकरण किया >> - P. (1319) भगवान ने गौशालक की तेजोलेश्या का सामर्थ्य और गौशालक का सिद्धान्त कहा >> - P. (1320) भगो >> - P. (1321) भगौतीदास >> - P. (1322) भग्गवेससगोत्ते >> - P. (1323) भडगो >> - P. (1324) भद्रादि चार प्रकार के हाथियों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1325) भवनपति देवों के भवन और आवास, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1326) भांगउ >> - P. (1327) भाव-स्तेन : गोविंदार्य आदि उदाहरण >> - P. (1328) भीम के मरने के बाद गोत्रास को कूटग्राह-पद >> - P. (1329) भुक्त भोगों के स्मरण का निषेध >> - P. (1330) भूगोलपुराण >> - P. (1331) भोगल (भूगोल) पुराण >> - P. (1332) भोगों से निवृत हो >> - P. (1333) भोगोपभोगपरिमाण >> - P. (1334) भोगोपभोगसंख्यान >> - P. (1335) भौंहो आदि के रोगो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1336) मंखली और भद्रा का गौशाला में निवास >> - P. (1337) मंखली और भद्राने अपने पुत्र का नाम " गौशालक " दिया >> - P. (1338) मंगू (आचार्य) >> - P. (1339) मंगूसा >> - P. (1340) मंदरपर्वत और गोस्तूपादि चरमान्तों का अन्तर >> - P. (1341) मंदरपर्वत के मध्यभाग से गोस्तूपादि पर्वतों के चरमान्तों का अन्तर >> - P. (1342) मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान वच्चे भेदरेखा, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1343) मधु-विष कुंभ के दृष्टांत द्वारा

पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1344) मधुसिक्थादि गोलों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1345) मन की अविरति पाँचो इन्द्रिय के साथ अनुस्यूत, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1346) मन की अविरति पाँचो इन्द्रिय के साथ अनुस्यूत, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1347) मनःपर्याय में दर्शन की अवधारणा, लेखक - गोयमचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> - P. (1348) मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1349) मनोज्ञ और अमनोज्ञ काम भोगों में राग-द्वेष का निग्रह करना चाहिए >> - P. (1350) मन्दर और गौतमद्वीप के चरमान्तों का अन्तर >> - P. (1351) मरु-गूर्जर की निरुक्ति. >> - P. (1352) मरुदेवा माताने उच्चगोत्रनो बंध केवी रीते ?, लेखक - राजदर्शनविजय >> - P. (1353) महागौरी >> - P. (1354) महाराओ श्री गोहड़जी नो जस >> - P. (1355) महावीर गौतम छंद >> - P. (1356) महावीर गौतमस्वामी छंद >> - P. (1357) महावीर वणिक जैसा है-गोशालक का आक्षेप >> - P. (1358) महावीरस्वामी जिनालय, खपाटीया चकला, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1359) महावीरस्वामी जिनालय, आगममंदिर रोड, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1360) महाशतक का गौतम को वंदन करना >> - P. (1361) महाशतक के पास गौतम को भेजना >> - P. (1362) मांडण (गूगली) >> - P. (1363) माइलोगोड, राजस्थान >> - P. (1364) मातंग विद्या : गौरी-गांधारी >> - P. (1365) मायुंगोयुं >> - P. (1366) मारमारगउदीपक >> - P. (1367) मार्ग के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1368) मार्गोपसम्पत >> - P. (1369) मित्र-अमित्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1370) मिथ्यात्वी जीव को कौन-सा कायवध, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1371) मुक्त-अमुक्त के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1372) मुहम्मद गोरी >> - P. (1373) मूर्द्धाभिषिक्त राजा के छः दोषायतन जाने बिना गोचरी जाने का प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1374) मूलिगउ >> - P. (1375) मृगोद्धर्मा >> - P. (1376) मेघ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1377) मेघ के दृष्टांत द्वारा माता-पिता के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1378) मेघ के दृष्टांत द्वारा राजा के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1379) मेधावी पुरुषों के प्रश्नों के भय से महावीर आरामगृह में नहीं ठहरता है l गोशालक का आक्षेप >> - P. (1380) मैथुन सेवन के संकल्प से उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1381) मैथुन सेवन के संकल्प से जांघ आदि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1382) यान के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के युक्तायुक्त चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1383) युग्य के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1384) युग्य गमन दृष्टांत द्वारा पथोत्पथगामी पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1385) योगों का चन्द्र के साथ योग प्ररूपण >> - P. (1386) योगोद्वहन >> - P. (1387) योगोद्वहनकाल >> - P. (1388) योगोद्वहनक्षेत्र >> - P. (1389) योगोद्वहनसदन >> - P. (1390) रज्जुगोज्ज >> - P. (1391) रस गौरव >> - P. (1392) रसगौरव >> - P. (1393) रसनेन्द्रियगगोपरति >> - P. (1394) रुयगोद >> - P. (1395) लगउं >> - P. (1396) लवणसमुद्र अंतर्गत गौतम-सूर्य-चंद्रद्वीप-वेलंधर-अनुवेलंधर पर्वतो >> - P. (1397) लवणसमुद्र के गोतीर्थ का और गोतीर्थ-विरहित क्षेत्र का प्रमाण >> - P. (1398) लवणसमुद्र-कालोदधिसमुद्र में अग्नि होती है, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1399) लांगूल >> - P. (1400) लागू >> - P. (1401) लेप की उदक शाला के समीप गौतम ठहरे हुए थे >> - P. (1402) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना >> - P. (1403) लोहार्य-गौतम द्वारा वीर-भक्ति >> - P. (1404) वगूए >> - P. (1405) वगूचे >> - P. (1406) वगूतुं >> - P. (1407) वगूतो >> - P. (1408) वगूत्यो >> - P. (1409) वगोयुं >> - P. (1410) वगोरइ >> - P. (1411) वग्गोअ >> - P. (1412) वग्गोरमय >> - P. (1413) वचनगोचरें >> - P. (1414) वचनयोग में इन्द्रिय तथा मन की अविरति, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1415) वचनयोग में इन्द्रिय तथा मन की अविरति, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1416) वत्थी नगरी में रहने वाली " हालाहला " नामकी कुंभारी की हाट में " गोशालक " >> - P. (1417) वन खण्ड के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1418) वनखण्ड के अनेक भागों में आलिगृहादि >> - P. (1419) वनखण्ड के अनेक भागों में जाइ-मण्डप, आदि >> - P. (1420) वर्ज्य के दर्शन उपशमन और उदीरण की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1421) वाग अगोचर >> - P. (1422) वागउ >> - P. (1423) वाद करने वालों की परस्पर (एक दूसरे की) निन्दा करते हो l गोशालक का आक्षेप >> - P. (1424) वाद्यगोष्ठी >> - P. (1425) वासुपूजयस्वामी जिनालय, मोती पोळ, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1426) विकृतिगोपुच्छा >> - P. (1427) विगूंचु >> - P. (1428) विगूचइ >> - P. (1429) विगूतउ >> - P. (1430) विगूतु >> - P. (1431) विगूयइ >> - P. (1432) विगोइ >> - P. (1433) विगोई >> - P. (1434) विगोणउं >> - P. (1435) विगोणहार >> - P. (1436) विगोयां >> - P. (1437) विगोवइ >> - P. (1438) विग्गोव >> - P. (1439) विग्गोवय >> - P. (1440) विग्रहगतिमां आयुष्य अने आहारकपणुं, लेखक - सुव्रतचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1441) विजयादि चार विमानों में उत्कृष्ट स्थिति, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1442) विज्जाहरगोवाल >> - P. (1443) विद्याधरगोपाल >> - P. (1444) विद्यासंवादगोष्ठी >> - P. (1445) विभूषा के संकल्प से उत्तरोष्ठादि रोगो में परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1446) विभूषा के संकल्प से जंघादि के रोगो के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1447) विमलनाथ-घरदेरासर जिनालय, भणशाळी पोळ, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1448) विरंगू >> - P. (1449) विशेषावश्यकभाष्य अने आवश्यकचूर्णिमां प्ररूपणाभेद, लेखक - नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1450) विष्णुकुमार मुनि के वैक्रिय शरीर का माप क्या ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1451) विष्णुकुमार मुनि के वैक्रिय शरीर का माप क्या ?, लेखक -

गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1452) वीणागोष्ठी >> - P. (1453) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1454) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1455) वीर-गौतम दृष्टांत >> - P. (1456) वीर-गौतम-कपिलसुत दृष्टांत >> - P. (1457) वेगउ >> - P. (1458) वैक्रिय विकुर्वणा, लेखक - सुव्रतचन्द्र-कुमुदचन्द्र-गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1459) वैक्रियलब्धि से विकुर्वणा करके आत्मप्रदेश उसमें ही..., जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1460) वैक्रियिकशरीराङ्गोपांग >> - P. (1461) वैगूर्विक >> - P. (1462) वैमानिक देवों की विभूषा और कामभोगों का प्ररूपण >> - P. (1463) वैयावृत्य करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1464) व्यवहार प्रकार : प्रधानता-गौणता >> - P. (1465) व्रण दृष्टांत के द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1466) शंख के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1467) शंखेश्वर पार्श्वनाथ-घरदेरासर जिनालय, भणशाळी पोळ, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1468) शक्रादि की गति के विषय में गौतम के प्रश्न और भगवान के समाधान >> - P. (1469) शत्रुंजय पर्वत पर गौतम की सिद्धी >> - P. (1470) शय्यातर का नाम-गोत्र.... >> - P. (1471) शरीर-इन्द्रिय और योगों के रचना काल में क्रियाओं का प्ररूपण >> - P. (1472) शरीराङ्गोपाङ्गनाम >> - P. (1473) शरीराङ्गोपांग >> - P. (1474) शांतिनाथ जिनालय, ओसवाल महोल्लो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1475) शांतिनाथ जिनालय, हजीरावाळो खांचो, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1476) शांतिनाथ जिनालय, माळी फळिया, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1477) शामळा पार्श्वनाथ जिनालय (अलग गोख), झवेरीवाडो, पाटण >> - P. (1478) शिष्य बनाने के लिए गौशालक की पुन : प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता >> - P. (1479) शिष्य बनाने के लिए गौशालक की प्रार्थना और भ. महावीर की उदासीनता >> - P. (1480) शिष्य बनाने के लिए गौशालक ने पुन : प्रार्थना की और भगवान ने अनुमति दी- गौशालक का साथ विहरण >> - P. (1481) शीतलनाथ जिनालय, पडीगूंदीनो पाडो, पाटण >> - P. (1482) शीतलनाथ जिनालय, सुभाषचोक, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1483) शुद्ध-अशुद्ध मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1484) शुद्ध-अशुद्ध वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1485) शुद्धगोवहित >> - P. (1486) श्रावस्ती के लोगों में चर्चा >> - P. (1487) श्रीगच्छनायक पट्टावली सज्झाय अथवा सोमविमल सूरि गोत >> - P. (1488) श्रीगौतमस्वामीना महसेन राजर्षि नामना शिष्य देवलोकमा !, लेखक - तारकचन्द्रविजय >> - P. (1489) श्रीगौतमस्वामीनी अष्टापद तीर्थनी यात्रा अंगे एक नवी वात, लेखक - शीलचन्द्रविजय >> - P. (1490) श्रुगालों को देखकर कछुओं ने अपने अंगों को संकुचित कर लिए >> - P. (1491) श्रुतनिश्रित मतिज्ञान, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1492) श्रुतसंविभागोऽयं मैत्रीमण्डपायताम्... (अग्रलेख), लेखक - मुक्तिचन्द्र-मुनिचन्द्रसूरिजी >> - P. (1493) श्रोत्रेन्द्रियरागोपरति >> - P. (1494) संगोढण >> - P. (1495) संगोली >> - P. (1496) संगोल्ल >> - P. (1497) संघाटकने छोडीने एकला गोचरी जवाना कारणभूत दोषो, लेखक - तारकचन्द्रसागर >> - P. (1498) संभवनाथ जिनालय, वकीलनो खांचो. गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1499) संभवनाथ जिनालय, मोतीपोळना नाके, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1500) सइगू >> - P. (1501) सत्य-असत्य परिणतादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1502) सत्व की विवक्षा से पुरुषों के पाँच भंगों का प्ररूपण >> - P. (1503) सद्दालपुत्र का गोशालक-वंदन संकल्प >> - P. (1504) सप्तगोदावर >> - P. (1505) समग्गउ >> - P. (1506) समुद्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1507) सहज दिव्यभोगों का निदान... >> - P. (1508) सांगो >> - P. (1509) सागोटियो >> - P. (1510) सागोदिया, मालवा >> - P. (1511) साङ्गोपाङ्ग श्रुत >> - P. (1512) सात गौरव >> - P. (1513) सात नरक और उनके गोत्र >> - P. (1514) सात नरक पृथ्वियों की अपेक्षा विस्तार से नैरयिक प्रवेशनक में प्रवेश करने वालों के भंगों का प्ररूपण >> - P. (1515) सातगौरव >> - P. (1516) साधु गोचरी व्होरवा जाय त्यारे उपाश्रयथी नीकळता शुं बोले ?, लेखक - वंदनरुचिविजय >> - P. (1517) सामायिकना पच्चक्खाणनो एक प्रकार, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1518) सारथि के दृष्टांत द्वारा योजक-वियोजक पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1519) सिद्ध होने वाले के संहनन के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न >> - P. (1520) सींगउ >> - P. (1521) सुखादिगोचरा प्रमा >> - P. (1522) सुगत-दुर्गत की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1523) सुरगो >> - P. (1524) सुरजमंडन पार्श्वनाथ जिनालय, हाथीवाळुं देरासर, गोपीपुरा, सुरत >> - P. (1525) सुविधिनाथ-घरदेरासर जिनालय, उमेश मेन्शन, गोपीपुरा , सुरत >> - P. (1526) सुहुम निगोद >> - P. (1527) सूंगो >> - P. (1528) सूई आदि के विपरीत प्रयोगो के प्रायश्चित्त सूत्र >> - P. (1529) सूक्ष्मनिगोद >> - P. (1530) सेना के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1531) स्पर्शनेन्द्रियरागोपरति >> - P. (1532) स्व-पर का निग्रह करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1533) स्वप्नसृष्टि में मन की भूमिका, जिज्ञासा - गोयमचन्द्रविजय >> - P. (1534) हरगोवन >> - P. (1535) हरगोवनदास >> - P. (1536) हरगोविंद >> - P. (1537) हाथी के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण >> - P. (1538) हार नगोदर >> - P. (1539) हिंगोबल >> - P. (1540) हिंगोल >> - P. (1541) हिंसा में योगों की तरतमता और कर्मबन्ध >> - P. (1542) हींगूआणि >> - P. (1543) हुइगउ >> - P. (1544) हुकुमचंद जैन कानूनगो (अमर शहीद) >> - P. (1545) हेमगौर >> - P.

Book Code Information